मंजूः साहस की मिसाल

सुनीता ठाकुर

मेरी उम्र सात साल की थी जब मां मर गई। थोड़े दिन बाद बाप ने दूसरी शादी कर ली। कुछ दिन बाद सौतेली मां ने जुल्म करना शुरू कर दिया। वह मुझसे सारा घर का काम कराती। खेतों पर काम कराती। खाने को ढंग से नहीं देती थी। कभी बासी रोटी, तो कभी जला हुआ चावल। मैं आधा तन ढके फिरती रहती। गंदे फटे कपड़े देती थी-पहनने को। न धुलने के लिए साबुन, न नए कपड़े सिलवाना। बापू को सिखा देती तो बाप भी मारता-पीटता था। आखिर तंग आकर मैं बारह साल की उम्र में अपने ननिहाल भाग गई।

> शक्तिशालिनी के ऑफिस में आई इस बहन की हिम्मत देखकर मन में आशा के हजारों दीप जगमगा उठे—जहां ऐसी अनूठी आस्था हो, विश्वास हो, लगन हो तो कौन महिलाओं पर अन्याय कर सकता है। जरूरत सिर्फ एक तनी हुई मुट्ठी की है। वह मुस्कुरा रही थी—ठीक कह रही हूं न दीदी—'अन्याय करने वाले से सहने वाला ज़्यादा गुनहगार होता है। मैं क्यों सहूं?

मेरा ननिहाल बहुत अच्छा था। वे लोग पैसेवाले थे। नाना-नानी बहुत प्यार करते थे। मैं वहां रहने लगी। थोड़े दिन बाद ही बाप भी वहां पहुंच गया। नानी-नाना को शराब पीकर गाली दी— 'तुमने मेरी बेटी को भड़काया है।' मुझे भी मारा-पीटा। नानी-नाना ने धमकाया तो चला गया, लेकिन अब वह बार-बार आकर हंगामा करता। हारकर नानी-नाना ने वापस जाने को कहा। उनकी बदनामी होती थी। मैं सौतेली मां के पास नहीं जाना चाहती थी। नानी के घर से भाग गई। मुझे पता नहीं कहां जाना था। चलती रही-छुपते-छुपाते। भूखी-प्यासी तीन दिन तक भटकती रही। सड़क पर चलते-चलते एक आदमी से खाने को मांगा तो उस आदमी ने मदद की। वह मुझे घर ले गया। वह एक डॉक्टर था —होम्योपैथी का। मैं उसके घर का काम करने लगी। बदले में उसने मुझे रहने और खाने को दिया अब मैं खुश थी। वो मुझे मेरे बाप जैसा लगता। वो भी मेरा बहुत ख्याल रखता था।

एक दिन उसने मुझे रात को दूध पीने को दिया। उस दिन मुझे बुखार था। दवा के बाद दूध पी लिया मैंने। मुझे नहीं पता था दूध में नशे की गोली मिली थी। दूध पीते ही थोड़ी देर बाद मुझे नींद आने लगी। अब उसने मुझे गोद में लेकर बिस्तर पर लिटा दिया। मैं नशे में थी—चाहकर भी कुछ नहीं कर पायी। आखिर में बेहोश हो गयी थी। डाक्टर ने मेरे साथ बलात्कार किया।

सुबह मेरे सारे कपड़े लाल थे। बहुत दर्द हो रहा था। मैं बहुत रोई। वापस चलने लगी तो उसने रोक लिया। कहा कि किसी से मत कहना-बदनामी होगी- मैं तुमसे शादी कर लूंगा—वैसे भी तुम्हारा कोई नहीं है। अब यह रोज का किस्सा हो गया। मैं साढ़े-बारह साल की थी जब मुझे

गर्भ रह गया। तेरह साल की उम्र में एक लड़की रश्मि पैदा हुई। अस्पताल से लौटी तो पता चला उसकी पहले से दो बीवियां और भी हैं। दूसरी पत्नी ने सब कुछ बता दिया। पहली बीवी देहात में छोड़ आया था। उसने हर कदम पर मुझे धोखा दिया। मेरी हिम्मत टूटने लगी थी पर अब मैं जाती कहां। उसने मुझे तरह-तरह से समझाना शुरू किया। हारकर किस्मत से समझौता करने की ठान ली। धीरे-धीरे घर में झगड़े होने लगे। उसकी दूसरी बीवी मुझे निकालने के लिए झगड़ने लगी। डॉक्टर भी मुझे शराब पीकर मारता-पीटता।

एक दिन घर पर अकेली थी। कुछ औरतें पढ़ाई-लिखाई का सर्वे करने आईं। मेरे बारे में पूछा। मुझे चेहरे पर चोट लगी थी। उनके बार-बार पूछने पर मैंने रोते-रोते सारी बात बताई। वे लोग मुझे महिला-केन्द्र का पता दे गईं। मदद मिलने की उम्मीद बंधाई। मैं महिला-केन्द्र चली गई। उन्होंने भी मदद की और सारी जानकारी दी। डॉक्टर को पता चला तो उसने मारा-पीटा। अब मैं वापस महिला-केन्द्र में आकर ही रहने लगी। महिला-केन्द्र के मार्फ़त पति के खिलाफ़ रिपोर्ट की। मुकदमा लड़ा। उसे दस महीने की जेल हुई।

मैं नवीं तक पढ़ी-लिखी हूं। महिला-केंद्र वालों ने दिल्ली राष्ट्रीय महिला आयोग का पता दिया। ताकि वहां से मेरी जान बचाई जा सके। बच्ची लेकर दिल्ली आ गई। अब और कोई चाह नहीं है। इसे ही आगे पढ़ाना-लिखाना चाहती हूं। ये बहुत समझदार है। बहुत जल्दी सीखती है। इसे बहुत पढ़ाऊंगी—ताकि ये मेरी तरह कहीं मार न खाए। अपने पैरों पर मजबूत बने। इसीलिए दिल्ली आई हूं। पति के खिलाफ़ मुकद्मा लड़ूंगी। वह बेल-अपील पर छूट गया है तो क्या? हाईकोर्ट

न्याय देगा। मैं उसे छोड़ूंगी नहीं-चाहे जो हो जाए। खूब दिन-रात मेहनत करूंगी। मेहनत से क्या डरना। आप लोग साथ देंगे न। बड़ी उम्मीद लेकर आई हूं। मेरी मेहनत बेकार नहीं जाएगी। मैं मंजू की बात सुनकर हैरान थी और खुश भी। मेरी आंखें नम थीं। शक्तिशालिनी के ऑफिस में आई इस बहन की हिम्मत देखकर मन में आशा के हजारों दीप जगमगा उठे—जहां ऐसी अनूठी आस्था हो, विश्वास हो, लगन हो तो कौन महिलाओं पर अन्याय कर सकता है। जरूरत सिर्फ़ एक तनी हुई मुट्ठी की है। वह मुस्कुरा रही थी—ठीक कह रही हूं न दीदी—'अन्याय करने वाले से सहने वाला ज्यादा गुनहगार होता है। मैं क्यों सहूं? □